...पर नहीं आया काबुलीवाला

अब ईद की लच्छेदार सेबईयों से नही आता है काबुल के अखरोट, पिस्ता बादाम एवं काजु की महक। इतिहास के आईनों से झाकनें पर ईद के पुराने वक्त के जश्न के सामने अब बच्चों की किलकिलाहट भी उतनी सुनायी नहीं पड़ती है। किन्तु आज भी ईद के अवसर पर बड़ें बुजुर्ग ईद की जो कहानी में काबुल वाले की चर्चा करते है तो उनसे मिल नहीं पाने का मलाल होने लगता है।

लम्बे दाढ़ी वाले रंग बिरंगे कपड़ों में लिपटे लम्बी पगड़ी लपेटे काबुल वाले से भारतीय ईद की खुशी में चार चाँद लग जाया करता था। बड़े बुजुर्ग बताते है कि ईद के चार पांच दिन पहले कोने-कोने में पहुंच जाने वाले काबुली वाले का स्वभाव एवं मिलनसार व्यवहार उन्हें ईद के दिन बाहरी होने का अहसास किसी को न होने देता था। ईद की लच्छेदार सेबईयों को अफगान की मिट्टी से उपजी काजू अखरोट बादाम एवं पिस्ता से खुशबु दार बनाने वाले काबुली वाले का भारत भ्रमण का मकसद व्यवसायिक होता था। किन्तु अक्सर काबुली वाला गरीब एवं निर्धन रोजेदारों को ईद की खुशी से पैसे की खातिर मरहूम नहीं होने देता था। व्यवसाय के मकसद से आये काबुली वाला ऐसे व्यक्तियों को आर्थिक मदद भी किया करते थे और उनके अगले साल पैसा लौटा देने की तगादा भी कर दिया करते थे। ईद के जस्नों में उनके साथ शरीक होकर उन्हे अहसास दिलाते थे कि 'बिरादर तुम अकेला नहीं है यह काबुल का पठान तुम्हारा हम बतन दोस्त भी तुम्हारे सुख-दुःख का साथी है'। इ

द के दिन काबुली वाला बच्चों पर खास मेहरबान होता था। अपने परीवार से दूर परदेश में आये काबुली वाला ईद के दिन अपने कमाई का धन बच्चों की इच्छा पुर्ति के खर्च में थोड़ा भी नहीं हिचकता था। अफगान पठानों की शौर्य पूर्ण कहानी के काबुली वाला से काबुल की भाषा में सुन कर बच्चे हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाया करते थे। जिसमें बड़ों की मौजूदगी से ईद की रौनक अनायास हीं सीमाओं की बन्धन तोड़ कर चारों दिशा में फैल जाती थी। जब भारत और अफगीस्तान दो अलग-अलग देशा बन गये है फिर भी काबुली वाला आया ही करता था। बच्चों एवं बड़ों को हंसाने सरहदों की सीमाओं लांघ कर आने वाले काबुली वालें की हकीकत से अन्जान बच्चे अपने बुजुर्गो से पछतावें भरी निगाहों से पुछ बैठते है कि अब्बा ईद आ गया पर काबुली वालां क्यों नहीं आया। जबाब में बड़े बुजुर्गो के पास कट्टर पंथीयों द्वारा लगायी गयी मजहबी आग को काबुली वाला के नहीं आने के कारण को समझाने के लिए शब्द नहीं जूट पाता है और जबाब में सन्नाटा के अलावा कुछ नहीं होता है।

● सम्राट कुमार

बड़ी ईदगाह

दा
है
मेरे
ईद
या
द
पड़े
हैं।
नी
का
है
ने
ए
क
व
न
र
र
1
.पर
न
नहीं आया

काबुलीवाला

ब ईद की लच्छेदार सेबईयों से नही आता है काबुल के अखरोट, पिस्ता बादाम एवं अ काजु की महक । इतिहास के आईनों से झाकनें पर इर्द के पुराने वक्त के जश्न के सामनं अब बच्चों की किलकिलाहट भी उतनी सुनायी नहीं पड़ती है। किन्तु आज भी ईद के अवसर पर बड़ें बुजुर्ग ईद की जो कहानी में काबुल वाले की चर्चा करते है तो उनसे मिल नहीं पाने का मलाल होने लगता है।

लम्बे दाढ़ी वाले रंग बिरंगे कपड़ों में लिपटे लम्बी पगड़ी लपेटे काबुल वाले से भारतीय ईद की खुशी में चार चाँद लग जाया करता था। बड़े बुजुर्ग बताते है कि ईद के चार पांच दिन पहले कोने-कोने में पहुंच जाने वाले काबुली वाले का स्वभाव एवं मिलनसार व्यवहार उन्हें ईद के दिन बाहरी होने का अहसास किसी को न होने देता था। ईद की लच्छेदार सेबईयों को अफगान की मिट्टी से उपजी काजू अखरोट बादाम एवं पिस्ता से खुशबु दार बनाने वाले काबुली वाले का भारत भ्रमण का मकसद व्यवसायिक होता था। किन्तु अक्सर कबुली वाला गरीब एवं निर्धन रोजेदारों को ईद की खुशी से पैसे की खातिर मरहूम नहीं होने देता था। ब्यवसाय के मकसद से आये काबुली वाला ऐसे व्यक्तियों को आर्थिक मदद भी किया करते थे और उनके अगले साल पैसा लौटा देने की तगादा भी कर दिया करते थे। ईद के जस्नों में उनके साथ शरीक होकर उन्हे अहसास दिलाते थे कि 'बिरादर तुम अकेला नहीं है यह काबुल का पठान तुम्हारा हम बतन दोस्त भी तुम्हारे सुख-दुःख का साथी है' । इ

द के दिन काबुली वाला बच्चों पर खास मेहरबान होता था। अपने परीवार से दूर परदेश में आये काबुली वाला ईद के दिन अपने कमाई का धन बच्चों की इच्छा पूर्ति के खर्च में थोड़ा भी नहीं हिचकता था।

अफगान पठानों की शौर्य पूर्ण कहानी के काबुली वाला से काबुल की भाषा में सुन कर बच्चे हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाया करते थे। जिसमें बड़ों की मौजूदगी से ईद की रौनक अनायास हीं सीमाओं की बन्धन तोड़ कर चारों दिशा में फैल जाती थी। जब भारत और अफगीस्तान दो अलग-अलग देशा बन गये है फिर भी काबुली वाला आया ही करता था। बच्चों एवं बड़ों को हंसाने सरहदों की सीमाओं लांघ कर आने वाले काबुली वालों की हकीकत से अन्जान बच्चे अपने बुजुर्गों से पछतावें भरी निगाहों से पुछ बैठते है कि अब्बा ईद आ गया पर काबुली वाला क्यों नहीं आया। जबाब में बड़े बुजुर्गों के पास कट्टर पंथीयों द्वारा लगायी गयी मजहबी आग को काबुली वाला के नहीं आने के कारण को समझाने के लिए शब्द नहीं जूट पाता है और जबाब में सन्नाटा के अलावा कुछ नहीं होता है। • सम्राट कुमार

बड़ी ईदगाह